Dr. Indra Kumari
Associate Professor

Spinoza's views of Pantheism

पाश्चात्य विचारक फेकनर की तरह स्पीनोजा भी सर्वेश्वरवादी दार्शनिक माने जाते हैं। भारतीय परम्परा में भी सर्वेश्वरवाद की व्याख्या की गई है। जहाँ तक स्पीनोजा के सर्वेश्वरवादी विचार का प्रश्न है यहाँ मूल सत्ता के रूप में द्रव्य की सत्ता में विश्वास किया गया है। द्रव्य एक असीम, सर्वव्यापक तथा व्यक्तित्वरहित है। यह स्वयंभू एवं शाश्वत सत्ता है। वैसे तो द्रव्य में अनेकों गुण हैं लेकिन मानव बुद्धि सीमित होने के कारण सिर्फ दो को ही जान पाती है —

Thought (विचार)
Extension (विस्तार)

विश्व के चेतन पदार्थ ईश्वर के विचार गुण के विकार (Mode) के रूप में जाने जाते हैं और जड़ पदार्थ उसके विस्तार गुण के विकार हैं। ईश्वर और विश्व समानार्थक हैं। दोनों समानार्थक हैं एवं दोनों में अभिन्नता सम्बन्ध है। ईश्वर विश्व व्यापी है लेकिन विश्वातीत नहीं है।

सर्वेश्वरवादी विचार नियतिवाद (determinism) के समर्थक हैं। यहाँ विश्वप्रक्रिया प्रयोजनहीन है। ईश्वर के लिए अपने को विश्व के माध्यम से व्यक्त करना आवश्यक माना जाता है। यह विश्व की प्रकृति का स्वाभाविक एवं अनिवार्य फल है। यहाँ एकता की वेदी पर अनेकत्व को तिरोहित कर दिया गया है। सीमित वस्तुएँ ईश्वर की सत्ता में विलीन हो जाती हैं सिर्फ ईश्वर की शुद्ध सत्ता रह जाती है। स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि स्पिनोजा के दर्शन में ईश्वर को छोड़कर सभी मिथ्या है। हालांकि इसका खण्डन हेगेल ने किया भी है — "Spinoza's Absolute is a lion's den to which all footprints point, but from which none return."

इसतरह स्पीनोजा के सर्वेश्वरवाद और ईश्वरवाद में कुछ सम्बन्ध है अर्थात् समानतायें हैं। दोनों यह ईश्वर को एक असीम तथा सर्वव्यापी सत्ता मानते हैं। ईश्वर

विश्व के लिए आवश्यक सत्ता है। इस आधार पर दोनों ईश्वर को विश्वव्यापी मानते हैं। ईश्वर के अभाव में विश्व की कोई कल्पना नहीं कर सकता है।

सर्वेश्वरवाद ईश्वर को विश्व का केवल उपादान मानते हैं जिससे वह विश्व में व्याप्त है। वह विश्व के बाहर नहीं जा सकता है। इनके ईश्वर में संकल्प इच्छाओं का पूर्ण अभाव पाया जाता है। यह जड़ एवं चेतन को ईश्वर पर आधारित मानता है। चेतन प्राणियों में इच्छा स्वातन्त्र्य का सर्वथा अभाव रहता है। स्पष्ट है कि ईश्वर के लिए विश्व अनिवार्य है क्योंकि इसी के माध्यम से वह अपने को अभिव्यक्त करता है। यह रहस्यवाद की पुष्टि करता है। रहस्यवाद एक ऐसा सिद्धान्त है जिसके अनुसार साधक अपने ईष्ट देव के साथ तादात्म्य स्थापित करता है। दूसरे शब्दों में यह कह सकते हैं कि इसमें उपासक एवं उपास्य के बीच द्वैत नहीं रह जाता है। सर्वेश्वरवादी भक्त भगवान के साथ आनन्द भाव रखता है। सभी वस्तुओं को ईश्वरमय समझता है। यह सिद्धान्त वैज्ञानिक है। बुद्धि स्वाभाविक रूप से अनेकता में एकता का दर्शन चाहती है। अनेकता इसी एक सत्ता का विकार है।

यद्यपि स्पिनोजा के सर्वेश्वरवादी विचार की भी कई आलोचनाएँ की गई हैं जिसके कारण यह धार्मिक भावना को संतुष्ट नहीं कर पाता है। जैसाकि प्रो॰ फ्लिन्ट ने कहा भी है — " सर्वेश्वरवाद मात्र एक अधार्मिक धर्म है अपितु नैतिकता का मूल ही उखाड़ फेंकता है।" जब व्यक्ति विशेषों का स्वतंत्र अस्तित्व ही समाप्त हो जाता है तो फिर धार्मिक आचरण कैसे सम्भव है? यह जड़वाद एवं प्रकृतिवाद के वातावरण में धार्मिक चेतना की व्याख्या नहीं कर पाता है। धार्मिक सम्बन्ध को कायम रखने के लिए उपासक एवं उपास्य के बीच कुछ दूरी रहना आवश्यक है। स्पिनोजा इस दूरी को मिटाकर धार्मिक सम्बन्ध को नष्ट कर देते हैं।

आलोचनात्मक व्याख्या के उपरान्त यह कहा जा सकता है स्पिनोजा का सर्वेश्वरवादी विचार नैतिकता के लिए घातक है।